मगधराज
सेनिय बिम्बिसार

विपश्यना विशोधन विन्यास

मगधराज

सेनिय बिम्बिसार

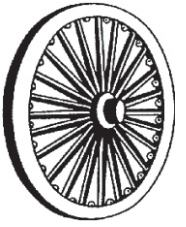

विपश्यना विशोधन विन्यास

धम्मगिरि, इगतपुरी

मगधराज सेनिय बिम्बिसार

विषयानुक्रमणिका

प्रकाशकीय [iii]

मगध का भाग्य जागा.....१

सेनिय बिम्बिसार १
बिम्बिसार का विवाह १
निर्बाध भोग २
बोधिसत्त्व सिद्धार्थ से प्रथम मिलन. ३
बिम्बिसार को भगवान का दर्शन-लाभ. ५
अभिलाषाएं पूर्ण हुईं ७
वेळुवन का दान ७

राजघराने की धर्म-चेतना ९

रूपगर्विता खेमा ९
राजकुमार अभय १४
अभयमाता पद्मावती १८
विमलकोण्डञ्ञ २१
अम्बपाली नगरशोभिनी धर्मशोभिनी बनी २२
राजकुमार सीलवा २६
अभया. २६
पुरोहित-पुत्री सोमा २७
राजकुमार चुन्द तथा राजकुमारी चुन्दी २८

अनदेखे मित्र ३०

महाराज तिस्स को अनमोल भेंट ३०
पुक्कुसाति को धर्म-रत्न उपहार ३२
पुक्कुसाति का गृहत्याग. ३७
हुई मित्रता फलवती. ४४
कोमलकाय सोण ५०
प्रेतलोक में पड़े रिश्तेदार ५१

ब्याधिपि दुक्खा ५५

स्वयं का भगंदर ५५
श्रेष्ठी का सिरदर्द ५५
बनारस का श्रेष्ठि-पुत्र ५७
राजा पज्जोत का पांडुरोग ५८

इदम्पि बुद्धे रतनं पणीतं ६१

आरामपाल के आम ६१
सुमन मालाकार के फूल ६३
वेसाली का अकाल ६५

बिम्बिसार का विनय में योगदान.....७२

दुतिय पाराजिक ७२
योद्धा-प्रव्रज्या निषेध ७५
एकत्रित हो धर्मकथा कहने की अनुमति ७६
पांच प्रकार के फल खाने की अनुमति ७७
भगवान द्वारा आराम स्वीकार करने की अनुमति . . ७८

विविध प्रकरण ७९

अनाथपिण्डिक का निमंत्रण ७९
स्थविर की कुटी ७९
राजा पसेनदि द्वारा बिम्बिसार से एक श्रेष्ठी की मांग ८०
कौन राजा अधिक शक्तिशाली ८०
पुण्यवंत कुम्भघोसक ८१
सच्चा सुखी कौन ८३
जोतिक का महल ८६

सत्पुरुष बिम्बिसार ८९

कोसलदेवी को दोहद ८९
बिम्बिसार की हत्या ९०
पुत्र-स्नेह ९२
त्रिरत्न-श्रद्धालु बिम्बिसार ९२

विपश्यना साहित्य.....९५

विपश्यना साधना के केंद्र ९७

प्रकाशकीय

संबोधि प्राप्त करने से लेकर महापरिनिर्वाण तक जीवन के ४५ वर्षों में भगवान गोतम बुद्ध ने हजारों सदुपदेश दिये। इनसे प्रभावित होकर केवल संन्यासी ही नहीं बल्कि समाज के हर संप्रदाय के, हर मान्यता के, हर पेशे के, हर वर्ग के, गृहस्थ भगवान बुद्ध की शिक्षा के प्रति खिंचे चले आये। उनके बताये गये मार्ग पर चल कर मंगल-लाभी हुए।

चाहे मगधनरेश बिम्बिसार हो या कोसलनरेश पसेनदि, चाहे महारानी मल्लिका हो या महारानी खेमा, चाहे अभय राजकुमार हो या बोधि राजकुमार, चाहे सेनापति बंधुल हो या सेनापति सिंह, चाहे राजमहिषी सामावती हो या दासी खुज्जुत्तरा, चाहे राजपुरोहित-पुत्र कच्चायन हो या राजवैद्य जीवक, चाहे दानवीर श्रेष्ठी अनाथपिण्डिक हो या भिखमंगा कोढ़ी सुप्पबुद्ध, चाहे जटिल कस्सप बंधु हों या परिव्राजक दारुचीरिय, चाहे सद्गृहिणी विसाखा हो या नगरवधू अम्बपाली, चाहे ब्राह्मण महाकस्सप हो या भंगी सुनीत, चाहे ब्राह्मण सारिपुत्त हो या चांडालपुत्र सोपाक, चाहे सदाचारी सीलवा हो या हत्यारा अङ्गुलिमाल - भगवान के संपर्क में जो आया, जिसने भी धर्म-गंगा में डुबकी लगायी, जिसने भी विपश्यना-साधना का अभ्यास किया, वही बदल गया, वही सुधर गया, वही दुःख-मुक्त हो गया।

इस पुस्तिका में मगधराज सेनिय बिम्बिसार का जीवनवृत्तांत प्रस्तुत किया जा रहा है।

———————

महाराज भाति तथा रानी बिम्बि के पुत्र बिम्बिसार ने पंद्रह वर्ष की अवस्था में मगध राज्य की बागडोर संभाली। अल्प समय में ही शस्त्रविद्या में निष्णात और सैन्य-संचालन में निपुण बिम्बिसार अङ्ग राज्य को भी अपने अधीन कर सेनिय, याने सेनानी, बिम्बिसार कहलाने लगा।

बिम्बिसार का विवाह कोसल की राजकुमारी कोसलदेवी से हुआ। उसकी काम-पिपासा निरंतर बढ़ती रहती थी। वह जब कभी किसी राज्य की देवांगनाओं-सदृश राजकुमारियों के रूप की चर्चा सुनता, तब उन्हें प्राप्त करने के लिए आतुर हो उठता। राजकुमारी खेमा के रूप-सौंदर्य के बारे में पता चला